

जवाहरलाल नेहरू का सामाजिक दृष्टिकोण: आधार, प्रमुख आयाम और समकालीन भारत में प्रासंगिकता

दीपक

शोधार्थी

सिंघानिया विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान

सारांश

जवाहरलाल नेहरू आधुनिक भारत के बौद्धिक एवं राजनीतिक इतिहास के एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थे। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने न केवल औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि एक लोकतांत्रिक तथा सामाजिक रूप से प्रगतिशील भारत के निर्माण की दृष्टि भी प्रस्तुत की। उनके सामाजिक चिंतन में धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, समानता, जातिगत भेदभाव का विरोध, महिला सशक्तिकरण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शिक्षा, आधुनिकीकरण, समाजवाद, सामाजिक न्याय तथा अंतर्राष्ट्रीयतावाद पर विशेष बल दिया गया।

नेहरू का सामाजिक चिंतन भारत की ऐतिहासिक परिस्थितियों तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राष्ट्र-निर्माण की चुनौतियों की उनकी समझ से गहराई से जुड़ा हुआ था। यह शोध-पत्र नेहरू के सामाजिक विचारों के प्रमुख आयामों का अध्ययन करता है तथा समकालीन भारत में उनकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करता है।

अध्ययन का मुख्य तर्क यह है कि यद्यपि नेहरू के समय की तुलना में भारत की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों में व्यापक परिवर्तन आया है, फिर भी धार्मिक सद्भाव, सामाजिक असमानता, लैंगिक समानता, जातिगत भेदभाव, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शिक्षा, समावेशी विकास तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग जैसे अनेक प्रश्न आज भी प्रासंगिक हैं। साथ ही, नेहरू के विचारों को वर्तमान भारत में किसी निश्चित नीति-प्रारूप के रूप में अपनाने के बजाय समकालीन परिस्थितियों के संदर्भ में आलोचनात्मक ढंग से समझने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: जवाहरलाल नेहरू, सामाजिक विचार, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, महिला अधिकार, समाजवाद, सामाजिक न्याय, आधुनिकीकरण, अंतर्राष्ट्रीयतावाद

1. परिचय

1947 में भारत को राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त होने के साथ ही देश के सामने ऐसी चुनौती आई जो केवल राजनीतिक सत्ता के हस्तांतरण तक सीमित नहीं थी। भारत को गरीबी, सामाजिक असमानता, सांप्रदायिक तनाव, जातिगत भेदभाव, अशिक्षा और आर्थिक पिछड़ेपन जैसी समस्याओं का समाधान करते हुए लोकतांत्रिक संस्थाओं का निर्माण करना था। जवाहरलाल नेहरू का राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन इन्हीं चुनौतियों की पृष्ठभूमि में विकसित हुआ।

नेहरू भारत को एक आधुनिक, लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और सामाजिक रूप से प्रगतिशील राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। उनका सामाजिक चिंतन किसी एक विषय तक सीमित नहीं था। इसमें धार्मिक संबंध, लोकतंत्र, जाति, महिलाओं की स्थिति, शिक्षा, विज्ञान, आर्थिक व्यवस्था, सामाजिक कल्याण, आधुनिकीकरण तथा विश्व के साथ भारत के संबंध जैसे विभिन्न विषय शामिल थे।

इस अध्ययन में नेहरू के सामाजिक विचारों के दस प्रमुख आयामों की पहचान की गई है—धर्मनिरपेक्षता; लोकतंत्र और समानता; जातिगत भेदभाव का विरोध; महिला अधिकार; वैज्ञानिक दृष्टिकोण; शिक्षा; आधुनिकीकरण; समाजवाद; कमजोर वर्गों का कल्याण; तथा अंतर्राष्ट्रीयतावाद।

नेहरू के लेखन और भाषण उनके इन विचारों के महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, 1951 में धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र के संबंध में दिए गए एक संदेश में उन्होंने ऐसे भारत की कल्पना की जिसमें विभिन्न धर्मों के लोगों को समान अधिकार और अवसर प्राप्त हों। इसी प्रकार विज्ञान संबंधी उनके भाषणों से स्पष्ट होता है कि वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण को केवल वैज्ञानिक अनुसंधान तक सीमित नहीं मानते थे, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए तर्क तथा प्रमाण-आधारित दृष्टिकोण को भी आवश्यक मानते थे।

अतः इस शोध-पत्र के दो प्रमुख उद्देश्य हैं—पहला, नेहरू के प्रमुख सामाजिक विचारों का अध्ययन करना और दूसरा, समकालीन भारत में उनकी निरंतर प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. जवाहरलाल नेहरू के प्रमुख सामाजिक विचारों का अध्ययन करना।
2. नेहरू की धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र संबंधी अवधारणाओं को समझना।
3. जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता के प्रति उनके दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

4. महिलाओं की उन्नति और शिक्षा के संबंध में उनके विचारों का विश्लेषण करना।
5. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिकीकरण की उनकी अवधारणा का अध्ययन करना।
6. उनके सामाजिक विचारों तथा समाजवादी विचारधारा के बीच संबंधों का अध्ययन करना।
7. कमजोर एवं वंचित वर्गों के प्रति उनकी चिंता को समझना।
8. उनके अंतर्राष्ट्रीयतावादी दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
9. समकालीन भारत में नेहरू के सामाजिक विचारों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।
10. वर्तमान परिस्थितियों में नेहरू के विचारों के अनुप्रयोग की सीमाओं तथा बदलते संदर्भ की पहचान करना।

3. शोध-पद्धति

यह शोध-पत्र गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें मुख्य रूप से दस्तावेजीय एवं पाठ-विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग किया गया है। अध्ययन की प्रमुख सामग्री में नेहरू अभिलेखागार में उपलब्ध नेहरू के भाषण एवं लेख, भारत सरकार की आधिकारिक सामग्री तथा अध्ययन सामग्री में प्रस्तुत वैचारिक ढाँचा शामिल है। उपलब्ध सामग्री में नेहरू के सामाजिक विचारों को दस प्रमुख विषयों में विभाजित किया गया है तथा वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता पर भी विचार किया गया है। शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, वैज्ञानिक विकास, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक समानता से संबंधित संस्थागत संदर्भों के लिए आधिकारिक स्रोतों का भी उपयोग किया गया है।

4. जवाहरलाल नेहरू के सामाजिक विचार

4.1 धर्मनिरपेक्षता

धर्मनिरपेक्षता नेहरू के भारत संबंधी दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण आधार थी। उनका मानना था कि राष्ट्र की पहचान किसी एक विशेष धर्म से निर्धारित नहीं होनी चाहिए तथा विभिन्न धार्मिक समुदायों के नागरिकों को समान अधिकार और अवसर प्राप्त होने चाहिए। 1951 में अखिल भारतीय शिया सम्मेलन को दिए गए अपने संदेश में नेहरू ने भारत के उद्देश्य को धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के लोगों को समान अधिकार और अवसर प्राप्त हों। नेहरू की धर्मनिरपेक्षता धर्म के विरोध पर आधारित नहीं थी। 1957 के एक लेख में उन्होंने स्पष्ट किया कि राज्य का कोई आधिकारिक धर्म नहीं होना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को अन्य लोगों के सम्मान के साथ धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए।

इस प्रकार, नेहरू की धर्मनिरपेक्षता धार्मिक स्वतंत्रता, समान नागरिकता, सहिष्णुता और राष्ट्रीय एकता से गहराई से जुड़ी हुई थी।

4.2 लोकतंत्र और समानता

नेहरू भारत के विकास के लिए लोकतंत्र को आवश्यक मानते थे। उन्होंने संसदीय संस्थाओं, चुनावों, व्यक्तिगत अधिकारों तथा नागरिकों की समानता का समर्थन किया। नेहरू के लिए राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों से पूरी तरह अलग नहीं किया जा सकता था। यदि समाज के बड़े वर्ग सामाजिक एवं आर्थिक असमानता का सामना करते रहें, तो केवल औपचारिक राजनीतिक समानता वास्तविक लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती। इसलिए उनका दृष्टिकोण लोकतंत्र को सामाजिक न्याय और अवसर की समानता से जोड़ता था। उनका मानना था कि जाति, धर्म, लिंग या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना सभी नागरिकों को समान अवसर प्राप्त होने चाहिए।

4.3 जातिगत भेदभाव का विरोध

नेहरू जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता को भारत की सामाजिक प्रगति में बड़ी बाधा मानते थे। वे चाहते थे कि भारतीय समाज वंशानुगत सामाजिक ऊँच-नीच से मुक्त होकर समानता और मानवीय गरिमा की दिशा में आगे बढ़े। 1961 के एक वक्तव्य में नेहरू ने सांप्रदायिकता, जातिवाद तथा अन्य सामाजिक समस्याओं को सामाजिक पिछड़ेपन से जोड़ा। उन्होंने विशेष रूप से कहा कि जाति व्यवस्था ने भारत को बहुत नुकसान पहुँचाया है। इसलिए उनका दृष्टिकोण केवल जातिगत भेदभाव को सामाजिक रूप से गलत मानने तक सीमित नहीं था, बल्कि वे इन विभाजनों को समाप्त करना राष्ट्रीय एकता और आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक मानते थे।

4.4 महिला अधिकार और सशक्तिकरण

नेहरू ने महिलाओं की उन्नति का दृढ़ समर्थन किया। वे महिलाओं की सामाजिक स्थिति को राष्ट्र की प्रगति का एक महत्वपूर्ण सूचक मानते थे। 1945 में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन को दिए गए संदेश में नेहरू ने महिलाओं को स्वतंत्र भारत के निर्माण में समान भागीदारी देने की आवश्यकता पर बल दिया तथा महिलाओं से संबंधित कानूनी और सामाजिक बाधाओं को दूर करने का समर्थन किया। उन्होंने महिलाओं को प्रभावित करने वाले कानूनी एवं सामाजिक सुधारों का भी समर्थन किया। स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में किए गए हिंदू व्यक्तिगत विधि सुधारों ने विवाह, उत्तराधिकार और संपत्ति जैसे विषयों में महिलाओं के कानूनी अधिकारों को मजबूत किया। इस प्रकार, नेहरू के लिए महिलाओं की उन्नति केवल

व्यक्तिगत अधिकारों का प्रश्न नहीं थी, बल्कि यह राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का आवश्यक अंग थी।

4.5 वैज्ञानिक दृष्टिकोण

वैज्ञानिक दृष्टिकोण नेहरू के सामाजिक दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक था। वे विज्ञान को केवल तकनीकी विकास का साधन नहीं मानते थे। वे चाहते थे कि वैज्ञानिक तर्क सामाजिक समस्याओं तथा दैनिक जीवन के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को भी प्रभावित करे। 1954 के वैज्ञानिक दृष्टिकोण संबंधी भाषण में नेहरू ने स्वतंत्र जाँच, प्रमाण, नए प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष बदलने की तत्परता तथा पूर्वाग्रहपूर्ण धारणाओं के विरोध पर बल दिया। इसी प्रकार 1951 में उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास को केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित न रखते हुए जीवन के सभी क्षेत्रों के लिए आवश्यक बताया। इस दृष्टिकोण ने वैज्ञानिक सोच को तर्क, आलोचनात्मक परीक्षण, प्रमाण के प्रति openness और सामाजिक सुधार से जोड़ा।

4.6 शिक्षा

नेहरू के सामाजिक परिवर्तन संबंधी दृष्टिकोण में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान था। उन्होंने शिक्षा को अज्ञानता कम करने, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने, लोकतंत्र को मजबूत करने तथा सामाजिक गतिशीलता के अवसर उत्पन्न करने का महत्वपूर्ण साधन माना। उनके नेतृत्व में भारत में उच्च शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान के संस्थानों के विस्तार पर बल दिया गया। इस काल में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान तथा उच्च शिक्षा के अन्य संस्थानों के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास हुए। इस प्रकार नेहरू का दृष्टिकोण शिक्षा को व्यक्तिगत विकास और राष्ट्रीय विकास दोनों से जोड़ता था।

4.7 समाज का आधुनिकीकरण

नेहरू भारतीय समाज का आधुनिकीकरण करना चाहते थे, किंतु साथ ही वे उसकी सांस्कृतिक विरासत के महत्व को भी स्वीकार करते थे। उनके अनुसार आधुनिकीकरण केवल औद्योगीकरण तक सीमित नहीं था। इसमें शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, लोकतांत्रिक संस्थाओं, सामाजिक सुधार तथा सामाजिक असमानताओं के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन भी शामिल था। उनकी दृष्टि में भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक वैज्ञानिक तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ जोड़ने की आवश्यकता थी। इस प्रकार आधुनिकीकरण का उद्देश्य एक आधुनिक, प्रगतिशील और तार्किक समाज का निर्माण करना था।

4.8 समाजवाद

नेहरू समाजवादी विचारों से प्रभावित थे और अत्यधिक आर्थिक असमानता को एक गंभीर सामाजिक समस्या मानते थे। हालाँकि उनका आर्थिक दृष्टिकोण प्रत्येक आर्थिक गतिविधि पर पूर्ण सरकारी स्वामित्व पर आधारित नहीं था। भारत ने एक मिश्रित अर्थव्यवस्था का मार्ग अपनाया, जिसमें सार्वजनिक तथा निजी दोनों क्षेत्रों की भूमिका थी। नेहरू ने नियोजित विकास, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों तथा कल्याणकारी नीतियों का समर्थन किया। उनका उद्देश्य आर्थिक विकास के माध्यम से गरीबी और असमानता को कम करना था। इस प्रकार उनकी सामाजिक और आर्थिक सोच ने **आर्थिक नियोजन को सामाजिक न्याय से जोड़ने** का प्रयास किया।

4.9 कमजोर वर्गों का उत्थान

नेहरू का मानना था कि यदि जनसंख्या का बड़ा हिस्सा सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ा रहेगा, तो राजनीतिक स्वतंत्रता का वास्तविक महत्व सीमित रह जाएगा। इसलिए उन्होंने वंचित वर्गों के लिए शिक्षा, रोजगार, आर्थिक अवसर तथा सामाजिक कल्याण तक पहुँच बढ़ाने वाली नीतियों का समर्थन किया। 1955 के एक भाषण में नेहरू ने सामाजिक परिवर्तन को कमजोर वर्गों की उन्नति तथा जाति और धर्म से परे समानता से जोड़ा। इससे स्पष्ट होता है कि वे कानून के समक्ष केवल औपचारिक समानता के बजाय **वास्तविक सामाजिक समानता** को महत्व देते थे।

4.10 अंतर्राष्ट्रीयतावाद

यद्यपि अंतर्राष्ट्रीयतावाद की चर्चा सामान्यतः नेहरू की विदेश नीति के संदर्भ में की जाती है, लेकिन यह उनके व्यापक सामाजिक दर्शन का भी महत्वपूर्ण हिस्सा था। उन्होंने उपनिवेशवाद और नस्लीय भेदभाव का विरोध किया तथा राष्ट्रों के बीच शांतिपूर्ण सहयोग का समर्थन किया। उनका मानना था कि नवस्वतंत्र देशों को बड़ी शक्तियों के बीच संघर्ष का साधन बनने के बजाय स्वतंत्र रूप से अपनी दिशा निर्धारित करने में सक्षम होना चाहिए। गुटनिरपेक्ष आंदोलन के विकास में उनकी भूमिका इसी व्यापक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती है। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का सिद्धांत उनके इस विश्वास पर आधारित था कि **राष्ट्रीय विकास और विश्व शांति एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।**

5. नेहरू के सामाजिक विचारों की समकालीन प्रासंगिकता

नेहरू का सामाजिक दृष्टिकोण आज भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि जिन अनेक समस्याओं पर उन्होंने विचार किया था, वे आज भी भारतीय समाज में चर्चा का विषय बनी हुई हैं। हालाँकि इसका अर्थ यह नहीं है कि नेहरू के समय की प्रत्येक नीति को वर्तमान परिस्थितियों में उसी रूप में लागू किया जाना चाहिए।

5.1 धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक सद्भाव

भारत आज भी अत्यधिक धार्मिक, भाषाई और सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। इसलिए समान नागरिकता और धार्मिक सहिष्णुता पर नेहरू का जोर आज भी महत्वपूर्ण है। समकालीन भारत में सामाजिक सद्भाव, समान नागरिकता तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण उपयोगी बना हुआ है।

5.2 लोकतंत्र और समानता

लोकतांत्रिक भागीदारी भारतीय सार्वजनिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी हुई है। किंतु आर्थिक और सामाजिक असमानताएँ औपचारिक राजनीतिक समानता तथा वास्तविक समानता के बीच संबंध को निरंतर चुनौती देती हैं। इसलिए लोकतंत्र को सामाजिक न्याय से जोड़ने का नेहरू का विचार आज भी प्रासंगिक है।

5.3 जाति और सामाजिक समावेशन

अस्पृश्यता कानूनी रूप से प्रतिबंधित है, फिर भी जाति आधारित भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार सामाजिक नीति के महत्वपूर्ण विषय बने हुए हैं। इस संदर्भ में जातिगत ऊँच-नीच के विरुद्ध नेहरू का दृष्टिकोण सामाजिक समावेशन और समान अवसर की दिशा में उपयोगी आधार प्रदान करता है।

5.4 महिला सशक्तिकरण

शिक्षा, रोजगार, राजनीति, विज्ञान, व्यवसाय और सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। फिर भी अवसरों की समानता और सामाजिक भेदभाव से जुड़े प्रश्न पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं। इसलिए महिलाओं की स्थिति को राष्ट्रीय प्रगति से जोड़ने वाला नेहरू का दृष्टिकोण आज भी महत्वपूर्ण है।

5.5 डिजिटल युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण

समकालीन डिजिटल युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का महत्व और अधिक बढ़ गया है। नागरिकों के सामने प्रतिदिन बड़ी मात्रा में सूचनाएँ और दावे प्रस्तुत होते हैं। ऐसी स्थिति में दावों पर प्रश्न उठाना, प्रमाणों की

जाँच करना तथा नए प्रमाण मिलने पर अपने निष्कर्षों को बदलने की क्षमता आवश्यक है। नेहरू के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को केवल तकनीकी ज्ञान के रूप में नहीं, बल्कि **तर्कपूर्ण एवं प्रमाण-आधारित चिंतन** के रूप में समझना आज के नागरिक जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी है।

5.6 शिक्षा और ज्ञान

आर्थिक तथा सामाजिक विकास के लिए शिक्षा आज भी अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान अर्थव्यवस्था में तकनीकी ज्ञान, सृजनात्मकता, संचार कौशल और निरंतर सीखने की क्षमता का महत्व बढ़ रहा है। इसलिए शिक्षा और अनुसंधान संस्थानों पर नेहरू का जोर आज भी महत्वपूर्ण है, यद्यपि वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताएँ डिजिटल प्रौद्योगिकी और बदलती अर्थव्यवस्था के कारण अधिक व्यापक हो गई हैं।

5.7 आधुनिकीकरण

नेहरू के समय से भारत में तकनीकी, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर व्यापक परिवर्तन हुए हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी, शहरीकरण, वैज्ञानिक अनुसंधान और रोजगार की बदलती प्रकृति ने भारतीय समाज को काफी प्रभावित किया है। फिर भी नेहरू का मूल प्रश्न आज भी महत्वपूर्ण है—**आधुनिकीकरण को सामाजिक न्याय और मानव विकास के साथ किस प्रकार जोड़ा जाए?**

5.8 समाजवाद और समावेशी विकास

आज भारत की आर्थिक व्यवस्था स्वतंत्रता के शुरुआती दशकों की अर्थव्यवस्था से काफी अलग है। निजी उद्यम और बाजार की शक्तियाँ अब अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। फिर भी आर्थिक असमानता की समस्या समाप्त नहीं हुई है। इसलिए गरीबी और अवसरों तक असमान पहुँच को लेकर नेहरू की चिंता आज भी समावेशी विकास और सामाजिक कल्याण की चर्चा में प्रासंगिक है।

5.9 कमजोर वर्ग और सामाजिक न्याय

आज भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाओं तथा आर्थिक अवसरों तक पहुँच में असमानताएँ दिखाई देती हैं। इसलिए वंचित और कमजोर वर्गों के कल्याण पर नेहरू का जोर समावेशी विकास और सामाजिक न्याय की अवधारणा के लिए आज भी उपयोगी है।

5.10 अंतर्राष्ट्रीयतावाद

व्यापार, प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन, वैज्ञानिक अनुसंधान, सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के माध्यम से विश्व पहले की तुलना में अधिक परस्पर जुड़ा हुआ है। शांतिपूर्ण सहयोग और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता पर नेहरू का जोर आज भी महत्वपूर्ण है, यद्यपि वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था शीत युद्ध के समय से काफी अलग है। इस संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और **रणनीतिक स्वायत्तता** भारत के लिए महत्वपूर्ण अवधारणाएँ बनी हुई हैं।

6. आलोचनात्मक मूल्यांकन

नेहरू के सामाजिक दृष्टिकोण का ऐतिहासिक महत्व अत्यधिक है, लेकिन उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन भी आवश्यक है। पहला, सामाजिक आदर्शों को व्यवहार में लागू करना उन्हें निर्धारित करने की अपेक्षा अधिक कठिन होता है। संवैधानिक समानता और लोकतांत्रिक संस्थाओं के बावजूद जाति, गरीबी और सामाजिक भेदभाव स्वतः समाप्त नहीं हुए।

दूसरा, आधुनिकीकरण की अवधारणा समय के साथ बदल गई है। नेहरू ने ऐसे समय में विज्ञान, उद्योग, नियोजन और सरकार के नेतृत्व वाले विकास पर बल दिया था, जब भारत अत्यधिक गरीबी और सीमित औद्योगिक क्षमता का सामना कर रहा था। आज भारत की आर्थिक संरचना काफी अलग है।

तीसरा, नेहरू के समाजवाद को पूर्ण सरकारी स्वामित्व पर आधारित कठोर व्यवस्था के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। उनके दृष्टिकोण में निजी आर्थिक गतिविधियों के साथ सार्वजनिक क्षेत्र का विकास भी शामिल था।

अंततः, नेहरू के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता 1950 और 1960 के दशक की नीतियों को यांत्रिक रूप से दोहराने में नहीं, बल्कि उनके पीछे निहित मूल सिद्धांतों पर पुनर्विचार करने में है। इनमें **समान नागरिकता, सामाजिक न्याय, तर्कशीलता, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, सहिष्णुता और समावेशी विकास** प्रमुख हैं।

7. चर्चा

नेहरू के सामाजिक विचारों के दसों आयाम एक-दूसरे से अलग नहीं थे, बल्कि परस्पर जुड़े हुए थे। धर्मनिरपेक्षता राष्ट्रीय एकता से जुड़ी थी; लोकतंत्र समानता से जुड़ा था; वैज्ञानिक दृष्टिकोण आधुनिकीकरण से जुड़ा था; शिक्षा सामाजिक गतिशीलता से जुड़ी थी; महिलाओं की उन्नति राष्ट्र के विकास से जुड़ी थी; तथा समाजवाद आर्थिक असमानता को कम करने से जुड़ा था। नेहरू को समझने के लिए इन विचारों की परस्पर संबद्धता को समझना आवश्यक है। उनका उद्देश्य केवल भारतीय अर्थव्यवस्था को आधुनिक बनाना नहीं था, बल्कि लोकतांत्रिक राजनीतिक संरचना के निर्माण के साथ सामाजिक विचारों और संस्थाओं

में भी परिवर्तन लाना था। इसलिए आज के संदर्भ में नेहरू के सामाजिक चिंतन की प्रासंगिकता को इस व्यापक प्रश्न के रूप में समझा जा सकता है कि भारत आर्थिक विकास को सामाजिक न्याय के साथ, आधुनिकता को सांस्कृतिक विविधता के साथ, वैज्ञानिक प्रगति को मानवीय मूल्यों के साथ और लोकतंत्र को वास्तविक समानता के साथ किस प्रकार जोड़ सकता है।

8. प्रमुख निष्कर्ष

अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त होते हैं:

1. धर्मनिरपेक्षता नेहरू की समान नागरिकता की अवधारणा का केंद्रीय आधार थी।
2. लोकतंत्र को उन्होंने केवल चुनावी व्यवस्था के रूप में नहीं, बल्कि समानता और सामाजिक न्याय से जुड़ी व्यवस्था के रूप में देखा।
3. नेहरू जातिगत भेदभाव को राष्ट्रीय एकता और सामाजिक प्रगति में बाधा मानते थे।
4. उन्होंने महिलाओं की उन्नति को राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक माना।
5. वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उन्होंने तर्कपूर्ण और प्रमाण-आधारित चिंतन के रूप में महत्व दिया।
6. शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण साधन माना गया।
7. आधुनिकीकरण में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, लोकतांत्रिक संस्थाएँ और सामाजिक सुधार शामिल थे।
8. समाजवाद में गरीबी, आर्थिक असमानता और सामाजिक कल्याण के प्रति उनकी चिंता दिखाई देती है।
9. कमजोर वर्गों के लिए सामाजिक न्याय उनकी समानता की अवधारणा का महत्वपूर्ण हिस्सा था।
10. अंतर्राष्ट्रीयतावाद शांति, उपनिवेशवाद-विरोध और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
11. इन विचारों में से अधिकांश की प्रासंगिकता आज के भारत में भी बनी हुई है।
12. हालाँकि, इन विचारों के अनुप्रयोग को वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिस्थितियों के अनुरूप ढालना आवश्यक है।

9. निष्कर्ष

जवाहरलाल नेहरू का सामाजिक दृष्टिकोण भारत के प्रारंभिक राष्ट्र-निर्माण की परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। उन्होंने धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, समानता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शिक्षा, सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण, आधुनिकीकरण और समावेशी विकास पर आधारित समाज के निर्माण की दिशा में प्रयास किए। इन विचारों की निरंतर प्रासंगिकता आज की विभिन्न बहसों में दिखाई देती है, जिनमें धार्मिक

सद्भाव, जातिगत भेदभाव, लैंगिक समानता, शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आर्थिक असमानता, सामाजिक कल्याण तथा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में भारत की भूमिका प्रमुख हैं। साथ ही, नेहरू के विचारों को वर्तमान भारत के लिए किसी निश्चित खाके के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। आज का भारत आर्थिक, तकनीकी और सामाजिक रूप से 1950 और 1960 के दशक के भारत से काफी अलग है। नेहरू के सामाजिक विचारों का स्थायी महत्व मुख्यतः उन सिद्धांतों में निहित है जिन पर उनका दृष्टिकोण आधारित था—**समान नागरिकता, सामाजिक न्याय, तर्कपूर्ण चिंतन, शिक्षा का विकास, महिला सशक्तिकरण, सहिष्णुता और समावेशी राष्ट्रीय विकास**। इस प्रकार, नेहरू की सामाजिक सोच ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण और बौद्धिक रूप से प्रासंगिक बनी हुई है, क्योंकि वह ऐसे प्रश्न उठाती है जो भारतीय लोकतंत्र के सामने आज भी उपस्थित हैं—विविधता में एकता कैसे बनाए रखी जाए, विकास को समानता के साथ कैसे जोड़ा जाए तथा लोकतांत्रिक और मानवीय मूल्यों को बनाए रखते हुए आधुनिक समाज का निर्माण कैसे किया जाए।

संदर्भ

1. नेहरू, जवाहरलाल। *भारत की खोज*। नई दिल्ली: जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल फंड / संबंधित संस्करण।
2. नेहरू, जवाहरलाल। *एन ऑटोबायोग्राफी*। लंदन: द बोडले हेड, 1936।
3. नेहरू अभिलेखागार। “सेक्युलर डेमोक्रेसी का आदर्श,” 2 अगस्त 1951। *जवाहरलाल नेहरू के चुने हुए कार्य*, द्वितीय शृंखला, खंड 16, भाग 2।
4. नेहरू अभिलेखागार। “द साइंटिफिक टेम्पर,” 2 जनवरी 1954।
5. नेहरू अभिलेखागार। “नीड फॉर द टेम्पर ऑफ साइंस,” 10 फरवरी 1951। *जवाहरलाल नेहरू के चुने हुए कार्य*, द्वितीय शृंखला, खंड 15, भाग 2।
6. नेहरू अभिलेखागार। “भारत में महिलाओं की स्थिति,” 29 अक्टूबर 1945। *जवाहरलाल नेहरू के चुने हुए कार्य*, प्रथम शृंखला, खंड 14।
7. नेहरू अभिलेखागार। “ऑन द रोड टू सोशलिज्म,” 11 नवंबर 1955। *जवाहरलाल नेहरू के चुने हुए कार्य*, द्वितीय शृंखला, खंड 30।
8. नेहरू अभिलेखागार। “सेक्युलरिज्म और भारत सरकार,” 15 मार्च 1957। *जवाहरलाल नेहरू के चुने हुए कार्य*, द्वितीय शृंखला, खंड 37।
9. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय। नेहरू पोर्टल। “जवाहरलाल नेहरू।”
10. नेहरू अभिलेखागार। “भारत में महिलाओं की स्थिति,” 6 दिसंबर 1957। *जवाहरलाल नेहरू के चुने हुए कार्य*, द्वितीय शृंखला, खंड 40।